शिक्षक-शिक्षा का उद्देश्य शांति दूत बनाना

उबैदुल्लाह मुबारक

गांधी विद्या मंदिर भारतीय शिक्षा, संस्कार और सामाजिक सरोकार के प्रति समर्पित संस्था का नाम है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा उद्बोधित अहिंसा, सत्य, श्रम, समता, सर्वधर्म-सद्भाव, सर्वोदय, ग्राम-स्वराज जैसे आदर्शों की पृष्ठभूमि में मरुस्थल के मालवीय श्री कन्हैयालाल दूगड़ द्वारा संस्थापित गांधी विद्या मंदिर ईंट, पत्थर और चूने से बने भवनों का समूह मात्र नहीं है बल्कि इन महामना के सर्वस्व समर्पण तथा छह दशकों की त्याग-तपस्या का जीवंत प्रतीक है। इस विकट रेगिस्तानों के रेगिस्तान में सन् 1950 को गांधी विद्या मंदिर के रूप में शिक्षा, चिकित्सा व ग्रामोत्थान के लिए कार्यक्रमों का एक समन्वित बीज-वपन किया जो आज सघन वटवृक्ष की भांति अपनी शीतल छांह से इस उष्ण-शुष्क अंचल को आप्लावित कर रहा है। बापू के आदर्शों को आधार बनाकर गांधी विद्या मंदिर की बुनियाद रखी गई है। आज यह रेगिस्तानों में रमणीय स्थल की तरह है। शिक्षा, संवेदना, नैतिकता, परंपरा और पर्यावरण को समर्पित यह संस्था आज शांति एवं सौहार्द के लिए शिक्षक-शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार के आयोजन की घोषणा से देश-विदेश के बुद्धिजीवियों के कौतूहल व कशिश का केन्द्र बन गया है। आज यह संस्था मोहब्बत और मानवता का मरकज व मदरसा बनता दीख रहा है।

गांधी विद्या मंदिर की स्थापना भी एक ऐतिहासिक प्रसंग है। बापू की हत्या की खबर सुनते ही श्री कन्हैयालालजी हिल से गए थे। अपने आदर्श शख्सियत के मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने एवं उनकी स्मृतियों को यादगार बनाने के लिए साविद्या या विमुक्तये और शिक्षा में मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित श्री दूगड़ ने शिक्षा और सेवा को अपना ध्येय बनाया। इस भू-भाग के सबसे ज्यादा सम्पन्न, उदार एवं लोकसेवी परिवार में जन्मे श्री दूगड़ ने तमाम शानो शौकत, एवं सुख-सुविधाओं को छोड़कर 1960 में अपनी संपूर्ण सम्पत्ति शिक्षा, समाजसेवा एवं ग्रामोत्थान के लिए समर्पित करके वानप्रस्थ का वरण किया। आचार्य विनोबा भावे की भावनाओं की कद्र करते हुए शिक्षा का दीपक देश के सबसे निरक्षर स्थल सरदारशहर में प्रज्ज्वलित किया। सन् 1955 में देश के पहले राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा इस संस्था की मुख्य भवन का शिलान्यास किया गया। सन् 1985 में दूगड़जी ने भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च सोपान संन्यास का वरण कर लिया। तब से वे स्वामी श्री श्रीरामशरणजी महाराज के नाम से प्रख्यात हुए। मानव और मानवता से मोहब्बत करने वाले स्वामीजी आध्यात्म, आयुर्वेद एवं योग के भी गुरु थे।

सन् 1952 में संत कवि श्री वियोगी हरी द्वारा मात्र तीन छात्रों से शुरू की गई कक्षा आज प्री-प्राइमरी से पीएच.डी.तक आवासीय/गैर आवासीय शिक्षार्थियों की संख्या 6000 तक पहुंच गई है। सन् 1952 में आयुर्वेद महाविद्यालय की योजना बनाई गई और सर्वोदय महाविद्यालय की स्थापना की गई। 1953 में श्री कैलाशनाथ काटजू द्वारा ग्रामोदय विभाग और प्रो. हुमायूं कबीर द्वारा बेसिक टीचर ट्रेनिंग कॉलेज का उद्घाटन हुआ। इसी साल महिला विद्यापीठ और बालबाड़ी की स्थापना हुई। सन् 1954 में ग्रामज्योति केन्द्र को गांधी विद्या मंदिर से विधिवत संबंध कर दिया गया। सन् 1955 में आयुर्वेद कॉलेज का उद्घाटन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के कर कमलों से हुआ। 1956 में जयप्रकाश नारायण की यात्रा यहां हुई और इसी वर्ष स्नातक कॉलेज, 1958 में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और 1968 में पीएच.डी. की शुरुआत हुई। 1969 में यू.जी.सी. के सहयोग से बी.टी.टी.सी. में गैर-आवासीय केन्द्र कायम किया गया। वर्ष 1974 में बेसिक स्कूल में "सीखो-कमाओ-खाओ" योजना की शुरुआत हुई। इसके दो वर्ष बाद ही अवगाहन पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। वर्ष 1993 में द इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज इन एज्यूकेशन यानी आई.ए.एस.ई. की स्थापना हुई जिसे वर्ष 2002 में यू.जी.सी. द्वारा डीम्ड-टू-बी का दर्जा मिला। वर्ष 2002 में डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन आरंभ किया गया। वर्ष 2003 से दूरस्थ शिक्षा को आरंभ किया गया। चेतना विकास मूल्य शिक्षा में स्नातक एवं स्नातकोत्तर को वर्ष 2011 में प्रारंभ किया गया। उच्च शिक्षा में जहां छात्राओं के लिए मीरा निकेतन एवं महिला महाविद्यालय है वहीं छात्रों के लिए बेसिक सिकेण्डरी और सेठ सम्पतराम दूगड़ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल भी है। वर्ष 2010 में अंग्रेजी माध्यम के लिए बेसिक पब्लिक स्कूल भी खोला गया है।

1190 एकड़ भू भाग में फैले इस संस्था में हर प्रवृत्ति के अलग-अलग पुस्तकालयों के अलावा केन्द्रीय पुस्तकालय में 40,000 पुस्तकों का संग्रह है। आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के रूप में बी.एल.डी. आयुर्वेद विश्व भारती, कृषकों के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, गौसेवा समिति, पशु संवर्धन एवं चिकित्सा केन्द्र, भी स्थापित है। बेसहारा बच्चों के लिए बालगृह और विकलांग गृह है। मेहमानों के लिए प्रणव-कुटीर की भी व्यवस्था है। शैक्षिक, सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों के लिए लगभग 5,000 जनों के बैठने की जगह वाली रामभंव-सोहन सभागार भी है। छात्रों के लिए जहां शिवाजी भवन, प्रताप भवन, नाहटा छात्रावास, अम्बेडकर छात्रावास एवं चरक भवन है वहीं छात्राओं के लिए दुर्गावती एवं बजाज छात्रावास के साथ ही एक आलीशान और आरामदायक सम्भूत भवन छात्रावास निर्माणाधीन है। गैर सरकारी एवं गैर लाभकारी इस संस्था में जन हितकारी सेवा योजनों सफलतापूर्वक चलाई गई है।

गांव-गांव के सर्वोतोमुखी विकास हेतु इस संस्था के अन्तर्गत ग्रामोदय विभाग का शुभारंभ भारत के सर्वतोमुखी विकास हेतु इस संस्था के अंतर्गत ग्रामोदय विभाग का शुभारंभ भारत के तत्कालीन गृहमंत्री डा. कैलाशनाथ काटजू के करकमलों से 3 अप्रैल,1953 को संपन्न हुआ। इस विभाग द्वारा गांवों की समस्याओं

के निराकरण हेतु अनेक उपक्रम संचालित होते रहे हैं। अभी तक 12 गांवों में प्राथमिक शाला- ग्रामीण पुस्तकालय का निर्माण, 37 गांव में अनौपचारिक शिक्षा, 45 गांव में साक्षरता अभियान-प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की स्थापना के साथ ही साथ 400 गांवों में आपनी योजना के तहत शिक्षा, स्वास्थ्य व साफ-सफाई हेतु सामुदायिक कार्य को भी कामयाबी के साथ अंजाम दिया गया है। 10 गांव में कुआं व हैंडपम्प निर्माण, वर्षा जल-संग्रह की व्यवस्था की गई है। आदिवासियों के लिए कुटीर निर्माण भी करवाया गया है। संस्था ने पीएचईडी के सहयोग से परिसर में 20 गहरे कुएं का निर्माण भी करवाया है जो सरदारशहर सहित 150 अन्य गांवों की जलापूर्ति करता है।

कुछ न चाहो, काम आ जाओ और कोई और नहीं, कोई गैर नहीं के सिद्धांत को अपने जीवन में अवतरित करते हुए स्वामीजी सन् 2005 में इस संसार से विदा हुए। वे महापुरुष आज सदेह हमारे बीच विद्यमान नहीं हैं, परन्तु उनकी कृतित्व, उनकी यशोकाया का मूर्त प्रतीक है। गांधी विद्या मंदिर जिसका कण-कण उनके सेवा-त्याग और प्रेममय जीवन की अमर कहानी कह रहा है। अध्यात्म एवं अध्यापक के प्रति अनुरागी स्वामीजी का पूरा जीवन मूल्यों को स्थापित करने में लगा रहा है। स्वामीजी दूरदर्शी थे इसलिए आज की समस्या को साठ साल पहले ही देख लिया था। शिक्षकों द्वारा शांति, सद्भावना और समर्पण की सीख व संदेश के वे हामी थे। इसी सोच से गांधी विद्या मंदिर में सबसे पहले शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का निर्माण किया था। आज वही महाविद्यालय विश्व शांति के प्रबुद्ध चिंतकों, शिक्षाविदों और शांति संगठनों के कार्यकर्ताओं से ऐसे शांति-शिक्षक बनाने की विधि के विमर्श में सहभागी है।

किसी शायर ने शायद उनके बारे में ही कहा होगा कि मैं अकेला ही चला था जानिब-ए- मंजिल मगर , काफिले जुड़ते गए और कारवां बनता गया । आज उनका वही कारवां विश्व शांति और सद्भावना के लिए कमर कस लिया है। मानव और मानवता के अमनो अमान के लिए कवायद भी शुरू कर दिया है। आज हर स्तर पर विघटन और संघर्ष के विनाशक तन्तु इतने गहरे तक जड़ जमा चुके हैं कि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक और धार्मिक ताकतों तक उसे उखाड़ने के बजाय स्वयं उससे प्रभावित और यहां तक कि नियंत्रित होती जा रही हैं। राष्ट्रहित की आड़ लेकर विकृत मनोवृत्ति के अनुसार राजनेता विश्व में भीषण असमानता और तज्जनित संघर्ष , विघटन और विद्रोह के बीज बो रहे हैं। विकास के नाम पर भोग और लोभ वृत्ति से प्रेरित अनुसंधानों ने पर्यावरण को जहरीला बनाकर प्रकृति को सर्वविनाश के कगार तक पहुँचा दिया। कतिपय दुराग्रही मनोवृत्ति के गुरु भोले-भाले निर्दोष युवकों को दिग्भ्रमित करके भयंकर आतंकवादी बना रहे हैं। इन परिस्थितियों ने यह सोचने पर बाध्य कर दिया है कि इन

शिक्षकों को तैयार करने शिक्षा के प्रति गंभीर प्रयास जरूरी

स्वतंत्रता के बाद से देश को सर्वाधिक अपेक्षा शिक्षकों को तैयार करने वाली शिक्षा से थी। आजादी के बाद से ही उस अपेक्षा को पूरा करने के लिए आयोग-दर-आयोग बनते गए, शिक्षा पर अनेकों समितियां बनी, लेकिन टीचर एजूकेशन उपेक्षित बनी रही। आयोगों और समितियों की सिफारिशें दरकनाई जाती रहीं। वे कौन लोग थे और उनके क्या निहितार्थ थे, यह विश्लेषण आज अप्रासंगिक हो गया है। लेकिन, यह एक स्थापित तथ्य है कि देश में शिक्षकों को तैयार करने वाली शिक्षा-सर्वाधिक उपेक्षा की शिकार बनी। इसमें विशेष रूप यदि कोई बात सर्वाधिक उपेक्षित और हमलों का शिकार बनी वह है, नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, मूल्य शिक्षा, व्यक्तित्व निर्माण शिक्षा और आज यह नये रूप में वैश्विक संगठनों की ओर शांति और समरसता की शिक्षा के रूप में सामने आई है।

शिक्षा शिक्षक की देश की संस्थाएं विशेष रूप से एन.सी.ई.आर.टी. और एन.सी.टी.ई. आदि आपसी विवाद, राजनैतिक हस्तक्षेप का शिकार बनी रहीं, इन संस्थाओं में जो भी मुखिया बने उनके अपने-अपने ऐजेण्डे थे, उन्हें थोपा गया, उनमें से कुछ लागू हुए और व्यक्ति बदलते ही लीपापोती भी होती रही। राजनैतिक पूर्वाग्रह और निहितार्थों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रमों में हेर-फेर के प्रयास होते रहे। कभी लाल और भगवे हस्तक्षेप हुए और कभी व्यवसायिक हितों को संरक्षण देने के एजेण्डे सेट होते रहे। ऐसे लोगों के पाठ जोड़े जाते रहे ताकि उन्हें रटने वाली युवा पीढ़ी एक वर्ग विशेष के प्रति सम्मोहित बनी रहे। ये संस्थाएं अपने उद्देश्य से भटक हुई लगती हैं। या सुविधाभोगी ब्यूरोक्रेसी और शिक्षा सिंडिकेटों के स्वार्थी कर्मकाण्डों का शिकार हो गईं। शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले भारत के अकादमिक लोगों में यह प्रकारांतर से यह बैठ चुका है कि भारत के पास शिक्षा का कोई परम्परागत अनुभव नहीं है, भारत की परंपरागत शिक्षा पर धर्मपाल या अन्य कुछ भी दावा करते रहे हों, गांधी और विनोबा के शिक्षा के प्रयोगों एवं प्रयासों की कद्र नहीं की गयी। नानाभाई भट्ट और मनुभाई पंचोली के सौराष्ट्र-गुजरात में प्रयोगों को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई। आध्यात्मिक संस्थाओं के प्रयासों पर साम्प्रदायिकता का स्टीकर चिपका कर उसे मूल धारा से जुड़ने नहीं दिया गया। क्योंकि, पश्चिम के प्रति विशेष अनुरागी सम्मोहन ग्रस्त विद्वानों का मानना है कि स्कूलों का अमेरिकीकरण और इंटरनेशनलीकरण करके या बाजारीकरण करके ही आधुनिक भारत के भविष्य को संजोया जा सकता है।

आज न केवल पश्चिमी, अमेरिकी और शीतयुद्ध में नष्ट हो गए साम्यवादी तथा कट्टरपंथी से त्रिवस्त हो रहे मुस्लिम देश भारत की तरफ उम्मीद से देख रहे हैं। आखिर, भारतीय समाज का इतिहास है कि बिना रक्तपात, हिंसा और युद्ध के भी यहां सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक और व्यवस्था संबंधी परिवर्तन कैसे होते रहे हैं?

किसी महापुरुष का दर्शन विचार और आचरण मात्र भी उस देश अहिंसक परिवर्तन का कारण बनता रहा है। हाल में ही गांधी, लोहिया, जयप्रकाश और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर अन्ना ने बिना रक्तपात किये भारत को आंदोलित किया और परिवर्तन की मानसिकता समाज में तैयार की।

विगत सुदूर में कुछ महावीर, बुद्ध, शंकराचार्य, कबीर, ज्ञानेश्वर नानाक आदि अनेक उदाहरण हैं। आखिर, शिक्षा जगत के ये कतिपय जिम्मेदार लोग भारत के इस दीर्घ और निरंतर बने रहने वाले अनुभव का लाभ क्यों नहीं लेना चाहते। क्या भारतीय समाज की जड़ों से भारतीय समाज की अपेक्षाओं की पूर्ति वाले शिक्षा के पाठ्यक्रमों को तैयार नहीं किया जा सकता? क्या भारत ऐसा पाठ्यक्रम नहीं बना सकता जिससे भारतीय समाज में शांति और समरसता के संस्कारवाली पीढ़ी का निर्माण किया जा सके? ■

संघर्ष मूलक शिक्षा

स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम हों या फिर शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम ,उसकी विषयवस्तु में संघर्ष केंद्रित पदार्थ मूलक भोगोन्मादी शिक्षा वस्तु विचार, (दर्शन और सिद्धांतों) को प्रचुरता से पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है। जब हम ऐसी मानसिकता से विद्यार्थियों और शिक्षकों को तैयार करते हैं जो संघर्ष, युद्ध, हिंसा और विरोध के समर्थन करते हों, चाहे वे आधुनिक थ्योरिस्ट हों या परम्परावादी आइडियलिस्ट, समाज कैसा तैयार होगा? दुनिया के अनेक देशों में हुई रक्त क्रांतियों और हिंसा का सहारा लेकर किये गए सत्ता परिवर्तन के प्रयासों के मूल में यही संघर्षवादी शिक्षा वस्तु है, जिसका अध्ययन न करके इन देशों ने ऐसे समाज की रचना की है। यह एक तरफ तो समाज की नई पीढ़ी में संघर्ष, युद्ध, हिंसा और विरोध की मानसिकता तैयार करती है, वहीं उसको भौतिकवादी तथा सत्ता की व्यक्ति केंद्रित प्रवृत्ति भ्रष्ट, तानाशाह अतिभोगी और सब कुछ हड़प जाने की प्रवृत्ति वाले शासकों का निर्माण करती है, वहीं इसका साम, दण्ड, दाम, भेद और हर प्रकार का अपराध व शोषण कर सत्ता की शीर्ष में बने रहते हैं। दरअसल, सत्ता के शीर्ष पर आसानी भ्रष्ट, भोगी और अपराध मानसिकता से ग्रसित सत्ताधीश स्वयं में अंतर्द्वंद का शिकार बनते हैं और रोग, पीड़ा तनाव और दुःख में डूबे रहते हैं केवल इस छलावे के साथ जी रहे होते हैं, कि उनके पास ग्लेमर है सत्ता और भोग के प्रचुर साधन हैं, अविश्वासी ही सही, लेकिन ललचाई मंशा से उनकी ओर देखने वाली एक भीड़ है। जिसके एवज में वे पीड़ा, तनाव, अपमान और संत्रास को झेलते हुए भी चेहरों पर एक फूहड़ और कृत्रिम हंसी का लबादा ओढ़े रहते हैं। ■

अंतरराष्ट्रीय सेमीनार का उद्देश्य-सुंदर संसार बनाना

शिक्षा का उद्देश्य है सफलता का सोपान चढ़ाना जो मूलरूप से शांति, सद्भाव, सौहार्द और सह-अस्तित्व से ही संभव है।

दुर्भाग्य से शिक्षा की अध्ययन सामग्री में से ये तत्व आज गायब है। आज शिक्षा की विषयवस्तु में पद, पैसा और प्रसिद्धि प्राप्ति के लक्ष्य से द्वंद्व-संघर्ष और भौतिकतावादी दृष्टिकोण की प्रमुखता है, यह चिंता वैश्विक स्तर पर बुद्धिजीवियों के द्वारा व्यक्त की जा रही है। आजकी तालीम तामीर के बजाय तबाही और तस्कीन के बजाय तनाव का कारण बनती जा रही है। आज एक शिक्षित युवा समझदार और संवेदनशील बनने के बजाय शातिर और स्वार्थी बनता जा रहा है। शायद मैकाले की शिक्षा प्रणाली हमें मानव मूल्यों से दूर कर मतलबी और मक्कारी की ओर ले जा रही है। आज की युवा पीढ़ी परिवार, परिवेश, परंपरा और पर्यावरण से दूर होता जा रहा है। युवा पीढ़ी में शिक्षा संस्थाओं के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है। एक शिक्षित युवा में उत्साह के बजाय उकताहट व उदासीनता का संचार अधिक हो रहा है। युवा पीढ़ी को ग्लोबल मंदी की खबर है, पर लोकल सब्जी मंडी की जानकारी नहीं। इन्हीं चिंताओं को ध्यान में रखकर गांधी विद्या मंदिर और इसके आई.ए.एस.आई मान्य विश्वविद्यालय, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, दि टेम्पिल ऑफ अंडरस्टेंडिंग, नेशनल स्पीरिच्युअल असेम्बली बहाई (भारत) तथा ग्लोबल हॉरमोनी एसोसिएशन (रूस) के सहयोग से शांति एवं सद्भाव के लिए शिक्षक-शिक्षा विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन 11 से 13 फरवरी, 2012 को गांधी स्मृति और दर्शन समिति, गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली में करने जा रहा है।

शिक्षक को समाज का शिल्पी कहा जाता है इसलिए शिक्षक शिक्षा का सीधा संबंध शिक्षा की बुनियादी संरचना से है। बुद्धिजीवियों में यह उम्मीद बंधी है कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन की पहल शिक्षक द्वारा ही सार्थक हो सकता है। अतः शिक्षक शिक्षा की विषयवस्तु, पाठ्यक्रम, अध्यापन प्रणाली, मूल्यांकन एवं अन्य शैक्षिक-शैक्षिणेतर गतिविधियों का उन्मुखीकरण शांति, सौहार्द, सह-अस्तित्व, आध्यात्मिकता और चरित्र निर्माण की ओर हो सके, इसके लिए इस अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जा रहा है।

वैश्विक स्तर पर और भारत के विभिन्न शिक्षा निकाय व विभिन्न शिक्षा आयोगों की यह अपेक्षा है कि शिक्षा में मानव मूल्यों, शांति, पर्यावरण-पारिस्थितिकीय संतुलन और सौहार्द की शिक्षा-वस्तु को शिक्षा के विविध पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाए। इस अपेक्षा की पूर्ति के लिए इससे संबंधित अध्ययन सामग्री को शोधकर तैयार करना तदोपरांत पाठ्यपुस्तकों को तैयार करना एवं अध्ययन प्रणालियों में आवश्यक संशोधन, परिवर्तन व परिमार्जन करना आवश्यक है। शिक्षा को समाज की बेहतरी और विकास के लिए योगदान देने वाली किस प्रकार बनाया जा सके इसकी पहल होनी चाहिए। शिक्षा मानव निर्माण की निर्माणशाला कैसे बने इसकी कोशिश-कवायद करनी चाहिए। साथ ही साथ हमें शिक्षा को सामाजिक सरोकार और विश्व बिरादरी से जोड़ने वाली बने इसकी शुरुआत की जानी चाहिये। शिक्षा हमें स्वार्थी नहीं संवेदनशील बनाए और हमें विरासत में बेहतर आज, बेहतरीन कल और सुंदर भविष्य छोड़े जाने की प्रेरणा दे।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर गांधी विद्या मंदिर सेमीनार के बाद देश की अन्य अकादमिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, शिक्षा निकायों के सहयोग से इसके लिए एक दीर्घकालीन शोध-परियोजना आरम्भ करने जा रहा है। और, इस प्रकार की अध्ययन सामग्री को पढ़ाने वाले शांति शिक्षकों को तैयार करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान बनाने पर भी विचार कर रहा है। यह सेमीनार इसी मुबारक मंशा को लेकर है कि इंसान बनेंगे हम और इंसान बनायेंगे। इंसानियत से मोहब्बत के पैगाम को लेकर ये शांति शिक्षक यानी शांति दूत देश-दुनिया में अमन और भाईचारे के साथ जीयो और जीने दो के पैगाम को भी फैलाएंगे।

इस तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में शिक्षक शिक्षा पर 15 विषयों पर कुल 22 सत्रों का आयोजन होगा, जिसमें उद्घाटन-समापन के अतिरिक्त चार मुख्य सत्र एवं चार विशेष सत्रों का आयोजन होगा तथा विषयों पर केंद्रित 12 सामानांतर सत्रों का संचालन होगा। विशेष सत्रों में एक सत्र "हॉरमोनियस सिवलाइजेशन की संभावना" ए.जी.सी. ऑफ हॉरमोनी-डा. लियो सेमस्को की पुस्तक का विमोचन होगा। इस पुस्तक में 25 देशों के 75 विख्यात विद्वानों के आलेखों का संकलन है। दूसरे सत्र में "शिक्षा में मानव मूल्यों की प्रासंगिकता" में संस्काराम के मानव मूल्य विशेषांक का विमोचन किया जाएगा। तीसरे सत्र "अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित सह-अस्तित्ववाद पर आधारित वैकल्पिक शिक्षा" में मानव-व्यवहार दर्शन के संयुक्त संस्करण (हिन्दी-अंग्रेजी)- ए. नागराज की पुस्तक का विमोचन किया जाएगा। चौथे सत्र "वैश्विक शांति और सद्भाव में मीडिया की भूमिका" में इस पर देश के सम्पादकों एवं वरिष्ठ पत्रकारों की टिप्पणियों/विचारों पर आधारित स्मारिका का विमोचन किया जाएगा। इस प्रकार यह सेमीनार अपने विश्व बंधुत्व की भावना को लेकर राजघाट में गांधीजी के आशीर्वाद से संसार को सकारात्मकता का संदेश देना चाहता है। यह सेमीनार एक सुंदर संसार बनाने में पहला कदम है। मानवता की मंजिल के लिए एक छोटा-सा पड़ाव है। आगे अभी बहुत दूर तक जाना है। कोशिश जारी है, काफिला साथ है, हिम्मत अभी हारा नहीं, हौसला अभी टूटा नहीं। इरादे बुलंद है और सफर जारी है।

सेमीनार हेतु अभी तक विभिन्न विषयों पर देश तथा विदेश से लगभग शोध पत्र प्राप्त हो चुके है जिनको इस सेमिनार में प्रस्तुत किया जाएगा। विभिन्न सत्रों में देश के विख्यात गणमान्यों ने मुख्य एवं विशिष्ठ अतिथि की रूप में संगोष्ठि में शामिल होने की स्वीकृति प्रदान की है। जिनमें से प्रमुख है- इंडियन कौंसिल ऑफ कल्चरल रिलेशन के अध्यक्ष डा. कर्ण सिंहव नागालैण्ड के राज्यपाल श्री निखिल कुमारव संसद सदस्य श्री ऑस्कर फर्नांडिसव तिब्बत के प्रमुख चिंतक डा. सेमदॉग रेनपोचेव स्वामी चिदानंद मुनिव पूर्व संसद सदस्य श्री महेश शर्माव पूर्व राज्यपाल प्रो. सिद्धेश्वर प्रसादव संविद सोमगिरीजी महाराजव आचार्य चंदानंद अवधूतव पूर्व न्यायाधीश सर्वोच्च न्यायालय श्री मुकुंदकॉम शर्माव राज्यावली आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री विजय कुमार। आगे ये फेहरिस्त लंबी हो सकती है इसकी संभावना बनी है।

इस अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में 12 देशों के एवं वैश्विक संगठनों के प्रमुख 20 देशों के विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। जिसमें ग्लोबल हॉरमोनी एसोशिएशन (जी.एच.ए.) के अध्यक्ष डा. लियो सेमस्को, इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एज्यूकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस (आई.ए.ई.डब्ल्यू.पी.) के अध्यक्ष प्रोफेसर चार्ल्स मर्सिका (अमेरिका), चिल्ड्रन ऑफ द अर्थ की प्रमुख डा. नीना मेहगाफ (अमेरिका) के अलावा डा. लॉज डारेजा (अमेरिका), प्रो. मारकोस स्टैग (स्पेन), आनंद रमा (जर्मनी), कॉस्मोपोलिटिनिज्म स्विट्जरलैण्ड के संस्थापक डा. टेफनी रोमी, भूटान से डा. रोनाल्ड कोलमेन, थाइलैण्ड से प्रो. चाकजू स्टापिंग आदि प्रमुख हैं। संगोष्ठी में देश के प्रख्यात शिक्षाविद, शिक्षक-शिक्षा संस्थानों के प्रमुख एवं शांति-सद्भाव के विशेषज्ञ मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हो रहे है। इनमें से प्रमुख है वीणा रावत एवं श्री एम. के. राव, श्री जे.एस. राजपूत, श्री सुदर्शन अयंगार, साध्वी चरित्र प्रज्ञा, हाजी सैयद सलमान चिश्ती, प्रो. आर. आर. गौड़, श्री नंदकुमार, डा. लियो रिबैलो, प्रो. एम. एम. कुरैशी, प्रो. लारेंस सुरेन्द्रा, श्री श्रीकांत बाजपेयी, डा. टी.एन. धर, प्रो. रवीन्द्र कुमार, डा. रजनीश अरोड़ा, प्रो. एस.बी.एम. चौधरी, डा. ए. के. मर्चेंट और प्रो. जे. एस. ग्रेवाल आदि प्रमुख है।

इस सेमीनार की सफलता से देश-दुनिया में जीयो और जीने दो का संदेश तो जाएगा ही, साथ ही साथ बेचैन दुनिया को अमनो चैन कायम होने का विश्वास भी बढ़ेगा। एक बेहतरीन दुनिया बनाने के लिए इतना भी बहुत है। वरन् कहावत भी है कि जब हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। शुभ कार्य की शुरुआत स्वयं से भी हो सकती है। यह शुरुआत इस सेमीनार से पूर्व ही हो चुकी है। अब मंजिल दूर नहीं। ■

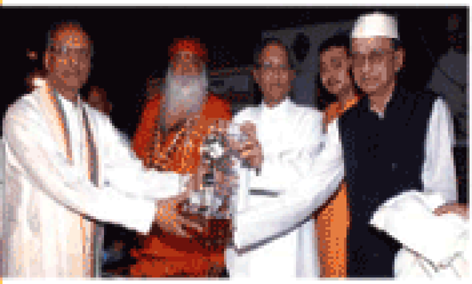

आइ.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय (गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर, राजस्थान) के कुलपति श्री मिलाप दूगड़ को शिक्षा और जनसेवा के क्षेत्र में उनकी दीर्घकालीन सेवाओं के लिए राष्ट्रीय सम्मानसूचक फिरोज गांधी पुरस्कार प्रदान किया गया।

विकट परिस्थियों को बदलने से ही मानव का भविष्य सुरक्षित हो सकता है। जब अन्य सभी उपाय प्रभावहीन प्रमाणित हो गए तब भी आश्चर्य की बात है कि यह सोचा ही नहीं गया कि शिक्षक को प्रशिक्षित और सशक्त करके उसको मानवता की इस भयंकर त्रासदी का सक्रिय यन्त्र बनाया जाना चाहिए। मानव इतिहास पर दृष्टि डालें तो दिखेगा कि सद्गुरुओं ने विराट सामाजिक समस्याओं का शिक्षा के माध्यम से सफल हल निकाला था। वर्धमान महावीर, गौतम बुद्ध, जीसस क्राइस्ट, गुरु नानक, संत कबीर, बिशप विन्सेन्ट और महात्मा गांधी आदि की सफलता यह बताती है कि शिक्षक समाज का शिल्पी और मानवता के भविष्य का निर्माता होता है।

इस ओर पहल करते हुए ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की सदियों पुरानी भारतीय परंपरा को स्थापित करने की कोशिश की जा रही है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा विभाग सहित अन्य कई विभाग सहभागिता करते हुए आगे आए हैं। इस कारवां में गुजरात विद्यापीठ, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, दि टेम्पल ऑफ अंडरस्टैंडिंग इंडिया, नेशनल स्पीरिच्युअल एसेम्बली ऑफ द भाईज ऑफ इंडिया भी शामिल हो गया है। अंतर्राष्ट्रीय संस्था ग्लोबल हॉरमोनी एसोसिएशन (जीएचए) की सहभागिता है। आगामी 11 से 13 फरवरी, 2012 को गांधी स्मृति दर्शन समिति, गांधी धाम, राजघाट, नई दिल्ली में शांति और सद्भावना के लिए शिक्षक-शिक्षा विषय अन्तर्गत अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन करने जा रहा है। जिसमें शिक्षा जगत में भोगोन्मादी, कामोन्मादी और लाभोन्मादी नजरिए और गला काट प्रवृत्तियों के बदलाव की चर्चा की जाएगी। इस सेमीनार द्वारा शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच सम्मान व स्नेह के माहौल को बनाने-बढ़ाने की पहल की जाएगी। इस सेमीनार में 23 राष्ट्रीय और 13 अंतर्राष्ट्रीय प्रबुद्ध एवं विख्यात शिक्षाविदों के सलाहकार सदस्यों के सहयोग से देश से लगभग 250 और विदेश से 50 प्रतिभागियों के भाग लेने की आशा है।

इस सेमीनार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का शिक्षक के माध्यम से साकारात्मक समाधान ढूंढने का एक सद्प्रयास किया जाएगा। देश-विदेश से आए हुए प्रबुद्ध चिंतकों और शिक्षाविदों के अमूल्य सुझावों पर अमल करने और अमली जामा पहनाने की पहल की जाएगी। शिक्षाजगत को एक सकारात्मक और सार्थक दिशा देने की कवायद की जाएगी जिससे कि गुरुओं का गौरव बढ़े और संसार में सुख-शांति और सौहार्द की शीतल हवा बहे। इस संगोष्ठि द्वारा प्राप्त अमूल्य सुझावों पर परिक्षण-प्रशिक्षण और प्रचार-प्रसार के द्वारा आई.ए.एस.ई. मान्य विश्वविद्यालय एक नया मार्ग शांति और सह-अस्तित्व का बनाए, यह प्रयास है।

इस सेमीनार द्वारा शिक्षा जगत एवं दुनिया की मौजूदा ज्वलंत समस्याओं को लेकर विचार विमर्श किया जाएगा। आज जिस तरह स्वार्थ में सने उग्र राष्ट्रवाद, वैचारिक दुराग्रह एवं आर्थिक असमानताओं में बंटी हुई दुनिया अराजक और आत्मघाती बनकर विश्व विनाश की ओर अग्रसर हो रही है उसका भी समाधान ढूंढा जाएगा। इस सेमीनार का मकसद सम्पूर्ण समाज में मानवीय चेतना, विश्व बंधुत्व और प्राकृतिक संतुलन का पाठ पढ़ाकर ऐसे शांति दूत बनाने की है जो वैश्विक नागरिकों की एक निर्माणशाला का गठन करे। गांधी विद्या मंदिर ने इस श्रम साध्य कार्य को करने का सद्प्रयास किया है। इसकी सफलता से समाज और संसार में एक साकारात्मक संदेश जाएगा जो वैश्विक बिरादरी को जोड़ने में कारगर होगा। इस सेमीनार का ध्येय है कि - हमारा पैगाम, पैगाम-ए-मोहब्बत है, चाहे जहां तक पहुंचे।

शिक्षकों को समाज का शिल्पी कहा जाता है। प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास में जहां शिक्षकों ने शिक्षा के द्वारा तत्कालीन समस्याओं का समाधान करके इतिहास की दिशा बदल दी। इतिहास के पन्नों में आज भी उनका नाम दर्ज है। जहां शार्गिद को देखकर ही उस्ताद का पता चल जाता था। आज वहीं गुरु गुड़ है जो चेले शक्कर हो गये की शिकायत आम है। शिक्षा का मंदिर आज सियासी अखाड़े का अड्डा बनता जा रहा है। शिक्षक का सामाजिक सरोकार घटता और सरकारी सर्विस बढ़ता जा रहा है। शिक्षकों को छात्रों से शिकायत है और छात्रों को शिक्षकों से शिकवा। हम देख रहे हैं कि आज कुछ शिक्षकों के कारण समाज में आम शिक्षकों का सम्मान कम होता जा रहा है। शिक्षा अब संस्कार की नहीं बाजार की वस्तु बनती जा रही है। जबकि शिक्षकों ने समाज को संस्कार और मानवीय मूल्यों के मार्गदर्शक की भूमिका निभाई है। ऐसा लगने लगा है कि आज संस्कार और सामाजिक सरोकारों के स्रोत सूखते जा रहे हैं। शिक्षक समझ नहीं पा रहे हैं कि उनसे कहां चूक हुई है। शिक्षा के मंदिर से मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ने के बाद आज शिक्षार्थी ही शिक्षा की अर्थी निकालने पर क्यों तुले हुए हैं। बड़ों का सम्मान और छोटों के प्रति स्नेह की भावना कहां विलुप्त हो गई है। स्कूल में सुधार के बजाय बिगाड़ का माहौल क्यों बनता जा रहा है। इस बिगड़े माहौल का मुजरिम आखिर कौन है। क्या पूरी व्यवस्था ही गड़बड़ा गई है। इस सेमीनार द्वारा उक्त समस्याओं की पड़ताल और सकारात्मक समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

आज शिक्षा जगत में समस्याएं अनेक हैं पर समाधान सिर्फ एक ही है कि हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। पहले हम ही अपने गिरेबान में झांकें। क्योंकि पेड़ बोए बबूल का तो आम कहां से होए की कहावत की तरह सुधार की शुरुआत स्वयं से ही करनी होगी। आज शिक्षकों के सामने प्रश्न यह नहीं होनी चाहिए कि मानवीय मूल्यों के उपवन को किसने उजाड़ा बल्कि उन्हें यह प्रयास करना चाहिए कि हम किस तरह सम्मान, शांति, सद्भावना, सौहार्द, सहिष्णुता और सह-अस्तित्व आदि मानवीय मूल्यों के बीजारोपण करें, तरुणों के दीमाग में ताजी हवा कैसे भरें। दोषारोपण का दकियानूसी दौर चला गया अब तो हमें युवा पीढ़ी के सामने आडंबर नहीं अच्छाई का आदर्श पेश करना है। यह पहल शिक्षकों के द्वारा ही होनी चाहिए क्योंकि शिक्षा की सार्थकता मानव मूल्यों, शांति, सद्भावना और सह-अस्तित्व की स्थापना में ही है। जीओ और जीने दो की तरह हमारा अंतिम लक्ष्य भी विश्व शांति और सद्भावना ही है। ग्लोबल विल्लेज का सपना मिले-शिकवे से नहीं बल्कि गले मिलने से ही साकार हो सकता है। तब ही हम विश्व बिरादरी को बेहतर आज और बेहतरीन कल की सौगात दे सकते हैं। इस सेमीनार द्वारा बंद दिमाग की तमाम खिड़कियों को खोलने का सकारात्मक प्रयास हो रहा है जिससे कि बाहर की ताजी हवा अंदर आए और भीतर की गंदगी बाहर निकले।

आज आप सब देख रहे हैं कुछ भ्रमित शिक्षक भोले भाले युवकों को आत्मघाती आंतकवादी बनाकर मानव समाज को भय और विध्वंस की ओर ढकेल रहे हैं। विश्व बिरादरी आज बारुद के ढेर पर बैठी हुई है। चिंता का विषय यह है कि क्या पता कब कोई सिरफिरा एक चिंगारी ही लगा दे।

विश्व बिरादरी की बरबादी का सामान हमने गलती से बिगड़े हुए हाथों में डाल दिया तो अंजाम क्या होगा। आज विश्व में आणविक परीक्षणों और अत्याधुनिक हथियारों की होड़ ने हमें विकास के बजाय विनाश की कगार पर खड़ा कर दिया है। आज परिस्थितिकीय असंतुलन और बिगड़ रहे मौसम के मिजाज से भी हम सभी चिंतित हैं अचंभित हैं। हमारा विकास कहीं मानवता का विनाश तो नहीं है। इस सेमीनार में बुद्धिजीवियों द्वारा वर्तमान समस्याओं से रू-ब-रू होने और शिक्षा व शिक्षक द्वारा सार्थक समाधान प्रस्तुत करने की आशा बंधी है। ■